गुरु-शिष्य सम्बन्ध इस धरती का सबसे पावन सम्बन्ध है । सद्गुरु की चेतना का संस्पर्श और कृपा पाने के लिए प्रत्येक शिष्य प्रयत्नशील रहता है । गुरुतत्त्व को गुह्यातिगुह्य कहा गया है । गुरुतत्त्व सभी तन्त्रों का सारभूत है जिससे सभी मन्त्रों की सिद्धि निश्चित रूप से होती है । दशमहाविद्या साधना में गुरु परम्परा मार्ग का अवलम्बन अनिवार्य है । किसी भी महाविद्या को आत्मसात करने लिए श्रीगुरु कृपा की आवश्यकता पड़ती है अतः साधकगणों को इन साधनाओं में उतरने के पूर्व योग्य गुरु से दीक्षित होना आवश्यक है । इस पटल में श्रीगुरु की महिमा का वर्णन करते हुए श्रेष्ठ स्तुतियों को साधकों के लाभार्थ दिया जा रहा है। साधकगण महाविद्या सपर्या करते समय श्रीगुरु पूजन में यहाँ दी गई स्तुतियों से पूजन सम्पन्न कर सकते हैं ।

।। श्रीगुरुपादुकापञ्चकम् ।।

ॐ नमो गुरुभ्यो गुरु पादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः ।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्यः ।।1।।
ऐंकार ह्रींकार रहस्ययुक्त श्रींकार गूढ़ार्थ महाविभूत्या ।
ॐकार मर्मप्रतिपादिनीभ्यां नमो नमः श्रीगुरु पादुकाभ्याम् ।।2।।
होत्राग्नि होत्राग्नि हविष्यहोतृ होमादिसर्वाकृतिभासमानम् ।
यद् ब्रह्म तद्बोधवितारिणीभ्यां नमो नमः श्रीगुरु पादुकाभ्याम् ।।3।।
कामादिसर्पव्रज - गारुडाभ्यां विवेकवैराग्य - निधिप्रदाभ्याम् ।
बोधप्रदाभ्यां द्रुतमोक्षदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरु पादुकाभ्याम् ।।4।।
अनन्तसंसार समुद्रतार नौकायिताभ्यां स्थिरभक्तिदाभ्याम् ।
जाड्याब्धिसंशोषणवाडवाभ्यां नमो नमः श्रीगुरु पादुकाभ्याम् ।।5।।